

1.233

युतिमादिकं प्रणिष्ठा कुर्यात् ॥ लिख्यते न क्रियानुयुतिमाथ
यनया कृतं यः ॥ न नोदस्यो निसंज्ञं न कार्या ॥ न न संज्ञा
निसंज्ञं न क्रियाया कृतं यः ॥ कृत्स्नं न स्त्रान न कृतं का न
थाया काय कृतं न साक्षात् ॥ न न काय कृतं न ज्ञानं ॥ स्त्रान क्रिया
न न संज्ञं न याया ॥ न न कृतं न क्रिया न वाधिविनाशकं तिः
मिव न यः ॥ ० ॥ न न वना ॥ न न कृतं न क्रिया न वाधिविनाशकं


















































































निमोगुनूदनमास्त्रादसिधियुद्धयययूजाकंयथासनयायूजा
आयरायकंयारुनाय.यातासनयायचनेअलवाय.यूजा
रुलजायलयोसंययागुइउयागुमदयागुमदयागु
यूजियूजाजैरैयौकितिनक.जलयागुविदमासयूवनम.दूद
यागुयूष्यनम.मयूयागुयूष्यनम.मैद्वेदद्वियागुयूष्यनम
मद्वेयागुयूष्यन.यूनिनयचा।मितसकिननकाश।।यन

गुम्सनुदनदनक.गुम्दलवउविय.सय्माकयलवागविस
जनयाय.।यनअजकासयिन्संकप्रयाययाउकायंकयेर
याउककरयेतायामयाय.।सिलकस्त्रानवाय.।वेयाचनाय
वजयूष्ययतिहस्त्राहा.अकारायवजयूष्या.नमस्त्राहा.तन्नेसं
रायवजयूष्ययतिहस्त्राहा.अकारायवजयूष्ययतिहस्त्राहा
अमाद्यसिधियवजयूष्ययतिहस्त्राहा.।सिवाहा.यमांस

[illegible]

च० वनसविन्दुं स प्र निष्ठा निष्ठ धा ॥ ५ ॥ स व न स मा ह्यः स व
 न स० नारि सं सिद्धं स व न स विन्दुं स प्र निष्ठा निष्ठ धा ॥ ६ ॥
 ऊर्ध्वं स मा स० ऊर्ध्वं स० नृन्दि सं सिद्धं ऊर्ध्वं स विन्दुं स य नि आत्
 धा ॥ ७ ॥ नडां स मा स० नम या द सं सिद्धं च० नडां स विन्दुं स
 यदिष्ठा निष्ठ धा ॥ ८ ॥ द स० स मा स० द स मा स० स० स० सिद्धं य० द
 स० स विन्दुं स प्र निष्ठा निष्ठ धा ॥ ९ ॥ प्रका द स मा स० प्रका द स

जिह्वा संसिद्धं च. उका दस विन्दुं संपत्ति कामि सुधा ॥ ११ ॥
 द्वादस सा सं. द्वादस वाक सुथि लं च. द्वादस विन्दुं संपत्ति
 कामि सुधा ॥ १२ ॥ **अथ न क सा कं थ भं यू ज्ञा या दू स्यं सिद्धका ॥ अथ न**
कू सा लय न म्म वा न कान कं थ न पु न विन्दुं संपत्ति कामि सुधा
थ न द थ स कू सा लय न म्म वा न कान कं थ न पु न विन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 हं. अथ न म्म वा न कान कं थ न पु न विन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 नां थ. पु न सति न दू स्यं सा च ना थ. पु न विन्दुं संपत्ति कामि

सा धा ॥ **अथ न क सा कं थ भं यू ज्ञा या दू स्यं सिद्धका ॥ अथ न**
कू सा लय न म्म वा न कान कं थ न पु न विन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 ६ उपायि द थ म्म क ॥ अथ वि सि म्म ला न न क उ त्व न दू स्यं सा च ना थ
 दि डां ग न म्म क ना म्म ध मा प्र था द सि विन्दुं संपत्ति कामि सुधा
 १ ॥ **अथि प्रं क दू कं र व स सा ध ना थ वा द सि विन्दुं संपत्ति कामि सुधा**
 २ ॥ **अथि थ क य न वू या प ना ना च ना थ वा द सि विन्दुं**
सुधा ॥ ३ ॥ अथि न म नू थ वू य ना वं धि न म्म का कू सा ध ना थ
वा द सि विन्दुं सुधा ॥ ४ ॥ अथि ल कं अ न्ति ज म ल दू र वः

मायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ ५ ॥ कस्मिन् विद्यादक
विद्यानवद्गुणननिदिनो मायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना
॥ ७ ॥ दिनकलु उत्पन्नं मायनार्थं वादसि विदुः स्व
प्ना ॥ ८ ॥ दूरवदूषयत्तस्य नाना नाना कस्मिन् वि
दुः दूरवमायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ ९ ॥ यत्
॥ ज्ञेयमूषयत्तनुदूषमायनार्थं वादसि वि

दं स्वप्ना ॥ १० ॥ सुचिमुखत्तनुदूषमायनार्थं वादसि
विदुः स्वप्ना ॥ ११ ॥ दग्धनायातकत्तनुदूषमायनार्थं
वादसि विदुः स्वप्ना ॥ १२ ॥ कीमिकीनोत्तनुदूषमा
यनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ १३ ॥ तमायज्जकाररु
मिउत्तनु मायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना ॥ १४ ॥ दूष
जाज्यं ज्ञेयमया र्गमादूरवमायनार्थं वादसि विदुः स्वप्ना

॥ १४ ॥ असि प्रवृत्त न यदुद्वेग मायु नार्थ वाद जयिदुं सै
स्तथा ॥ १५ ॥ अग्नि द्यत महान को लेद्वेग मायु नार्थ रम
द सयिदं सि विदं श्वथा ॥ १६ ॥ यन क मा कं ~~व~~ व स रं स
युजा ॥ वृन काडा ॥ कथू क या तनु ग स नं रु स ज ग व जा व
ह स पु न स व पा खाना स स क्रा यि त न नो ज न न ति न क्रा
सु द यि व क स व न ति स र व न स सा हा ॥ ज ज मा न या क्रा
व

स न ति न कं ॥ य न वृ व ट म स ग श्व र का व नि क ज य ति का स्वा
क ॥ क मा कं थ न यु जा ॥ वृ न का डा क स वि या डा सा स्त्रि था य कं
॥ य न श्व यु ज शि नि स मा ल का स क स्या नं वि द थ यु क री व
न डा यु जा क मा क थ थ या या ॥ य न मू ल वि द थ य क थ न यु जा या
य ॥ उ न ल हि ल का डा वि क ल वि द थ य र स ॥ वृ न का डा र व ज
डा च ना सा ति न ना थ य वा क्रा य क्रा ॥ य न मं नु यि ल कं स क स
ना

नकि जल न नके ॥ वाक मा त्रक हुँ नैय तय ॥ सितक ॥ न ॥ दि
 उरुतिका यिडुयडाजजमान न स्नान जग षण जाहा न न जानक
 यर्म म्ना कायकं कि न न स्नान म्ना यिडु स म्ना युक निरुतं ॥
 सितका ॥ म्ना म्ना म्ना म्ना म्ना ॥ कि न न ॥ ज न म स्नान क
 सिहाय यर्म चक्र य वरु कं ॥ तैव नु कं ज गत् सर्व ज्ञाय य सर्वः
 दू ग नि ज्ञान य ॥ १ ॥ न म स्नान वं ज उ विष य म्ना म्ना नु स्नान य न

॥ सर्व सत्व ही ना था य ज्ञान त त्वय द सक र ॥ न म स्नान जल श्लेष
 स म्ना ट रा व न ॥ तैव नु कं ठि नं सर्व ज्ञ रिषा क य दाय क ॥ ३ ॥
 न म स्नान य द्वा उ श्लेष ज्ञ रा व य प्रत्य व द क ॥ आ स्ना ज य रि स न य
 यर्म म्ना य द्वा त न ॥ न म स्नान विज्ञ श्लेष य ज्ञ रा व द्वा त म न्नु धि न
 विज्ञ क म्ना क ज्ञ र य स त्वा न्ना दुर य ज्ञ ट य ज ॥ न म स्नान ज
 श्लेष तैव नु कं म रा व य सर्व सत्व वा या ठ षू स त्वा वि ति क

सिध्दति जानमस्तु चउत्तरीय चिनामनिष्ठुज वल्लभाननसर्वस
त्वानासद्वाग्मायलियूरयनता नमस्तु नीस्त्री प्रायायकं प्रपूक
सद्ददकः चतुर्मास वेजरं ग्रं सत्वानां वावियायनं ६॥ सात्य
मानातथाजीना नृणां दवाग्मा नृययः ४ वृषा पृष्ठा चदियायक
गं अदविं नमास्तु नं ८॥ द्वालमश्च थिना वग्मा अकृत्वा स
ह्लाट कः ४ शुद्धाग्रश वनिजान् द्वा सवालनमास्तु नं १०॥ वेका

मदिका दोथी ना अच तत्ता सिद्धौ द्वा जया अर्जनः ४ मूदिना दो दस
थित्वा वाविस नानमास्तुय १॥ ७ कृडा नृड नृवा वं प्रां काला
कपालचतुदसं ४ अग्नि जाकल वायुश्च रुना वियति नस्तु नं १२
॥ अन्ननस्तु गजान सतु ननै नू जागत ४ वज्रच नृ वना म
दी ०० द्रु र्णु मूदा रु जे न १३॥ वग्मा दात्म दस वृ आत्म मनु र्क
त्ययं न १३॥ तिजा दूयद नं मूकी कृ सल वृ नच मवू नासिका

वाहविनाहलमहं द्युतादनैके दधिय कनिजानुर्या तायन
 लसुपादया अन दो सर्वज्ञाय जायत वृषविज्ज वान् ॥ काक
 विनुप्रदानन काक सिविह तुना ॥ हानयिडं प्रदानेन धम्म
 माहायूपद सका ॥ प्रतसरि न भाच नाथाय वाद सविडं प्र
 कासया ॥ यन सका कन वलय का जा स सका ना म्हाज्ज अ वा
 न म्हाज्ज न्दुयक ॥ गुरु दन सव द्युय के लिख चाक ह सचा

रुजा ॥ स रं ५ ह्ये ॥ मौथन निसजाज्ज अगं वा ज्ञाय के उ
 वग्या स दकना भाह १ ह्याया चित पूजायोय सक स्या न निचक
 दूषयन वाना उ अशिव द न्ना डि काय सन नाक यूया उ
 आका स मा ल ग या ठा वि स जन या च क ॥ किवा ल वू स अ स द ल
 व ल चा या ज का वू न ट स न्ना डि का के य ल का वू न्ना द ज न न
 स क य जा दि न क ॥ यन वू य स न दू य क्क नाहा य स दू द स र य

गुजुदना मादि १

कृतं सत्तं वस्वत्तद्वयकृत्तुं शसं तनंद्वयकृत्तुं
राशनं सत्तं वस्वत्तद्वयकृत्तुं ॥ **जमानयाजं सत्तद्वय**
तद्वय ॥ सितं क॥ मा॥ ग्र॥ स॥ श्र॥ वे॥ य॥ पू॥ वा॥ मू॥ षं॥ द॥ कि॥ ना॥ मू॥ र॥ यं॥
य॥ कि॥ ना॥ मू॥ षं॥ उ॥ त॥ ना॥ मू॥ षं॥ अ॥ र्च॥ य॥ ति॥ ऋ॥ ण॥ ॥ ज॥ त॥ वा॥ न॥ य॥
गा॥ स॥ व॥ ता॥ क॥ ल॥ र॥ य॥ मा॥ य॥ न॥ वा॥ दा॥ श॥ वि॥ स॥ ज॥ न॥ या॥ य॥ श॥ न॥
वि॥ द्र॥ स॥ क॥ स॥ न॥ रु॥ का॥ स॥ या॥ अ॥ च॥ य॥ क॥ त॥ द्वा॥ य॥ श॥ सा॥ शु॥ रु॥ ॥

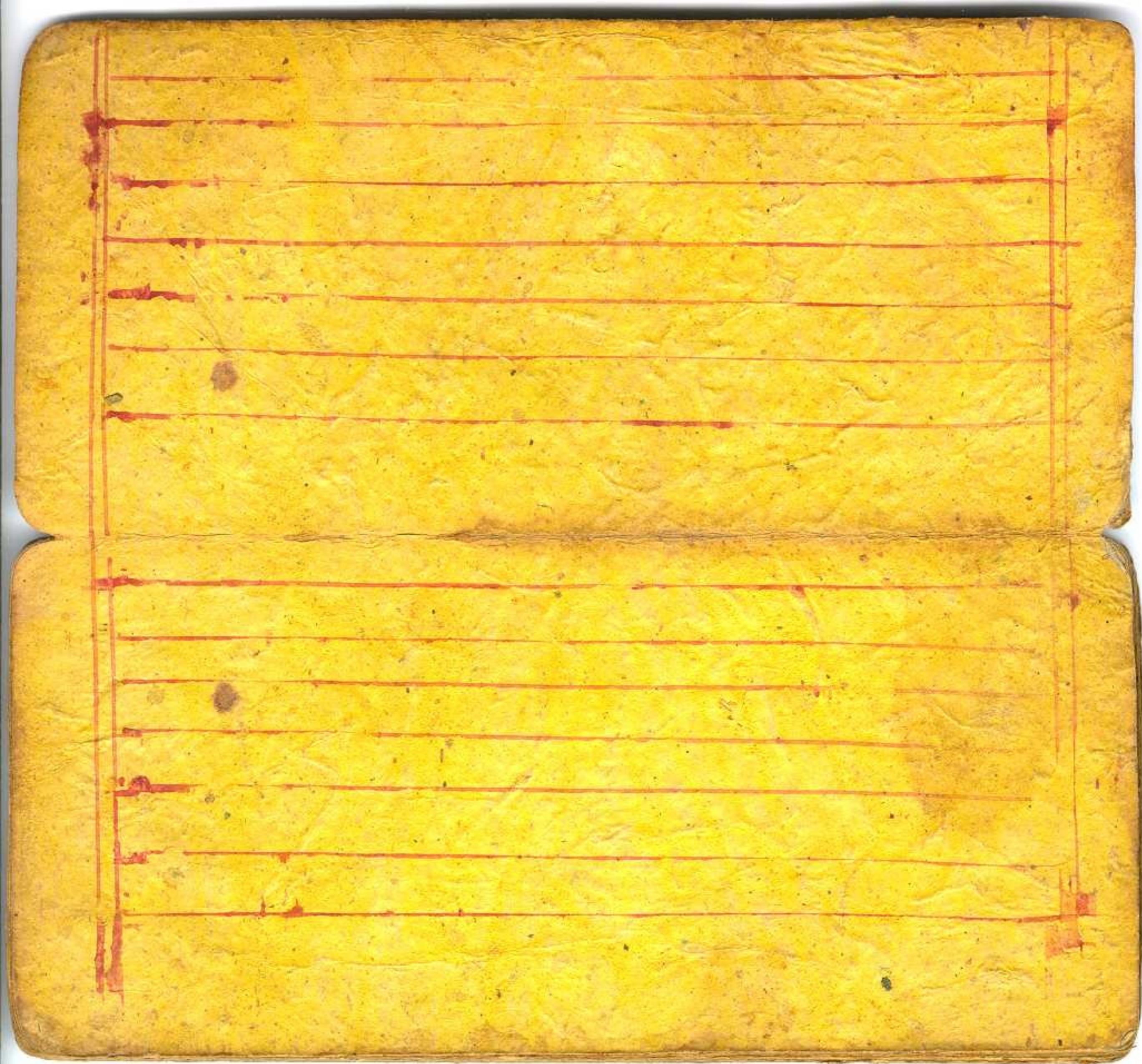


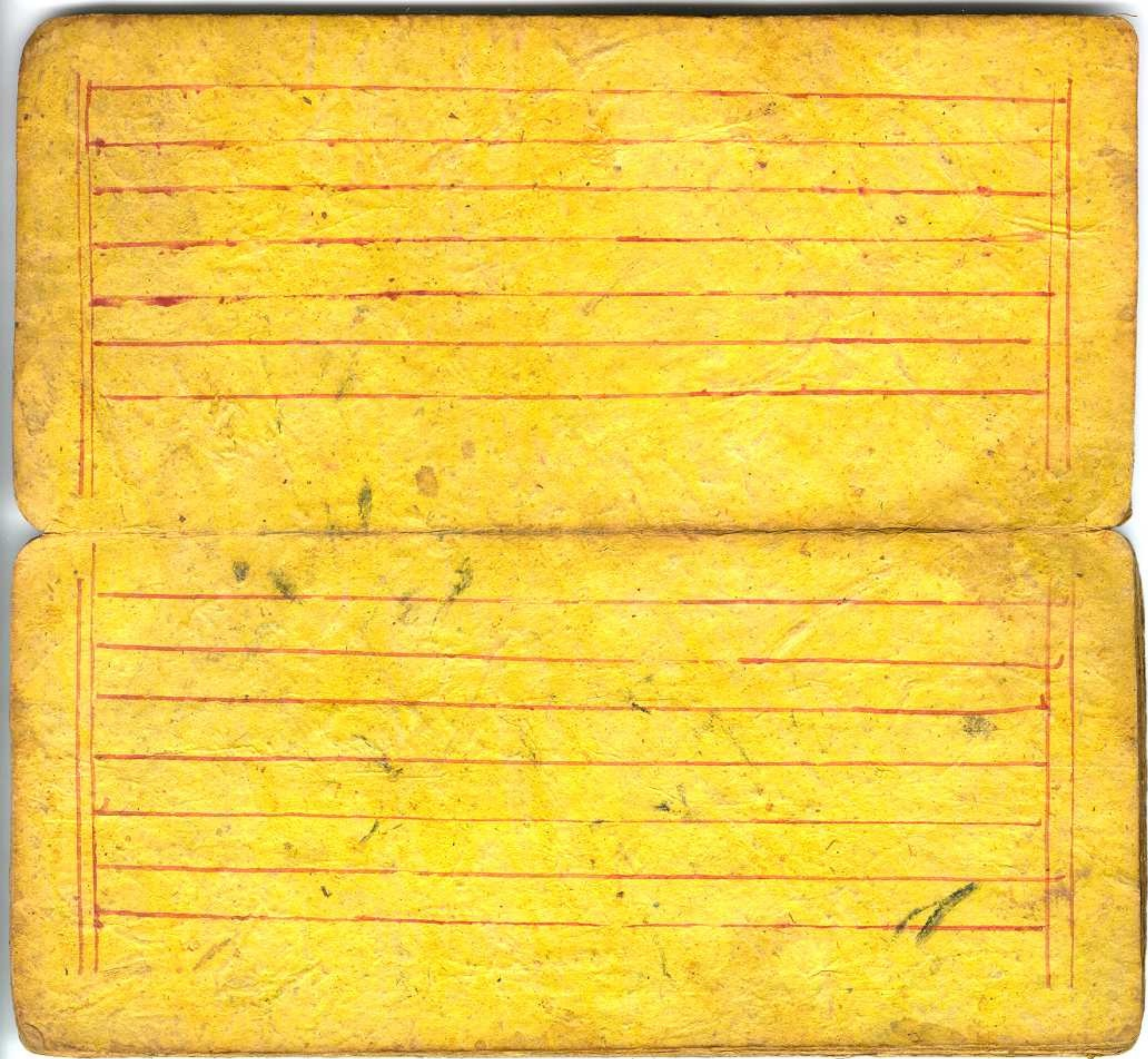


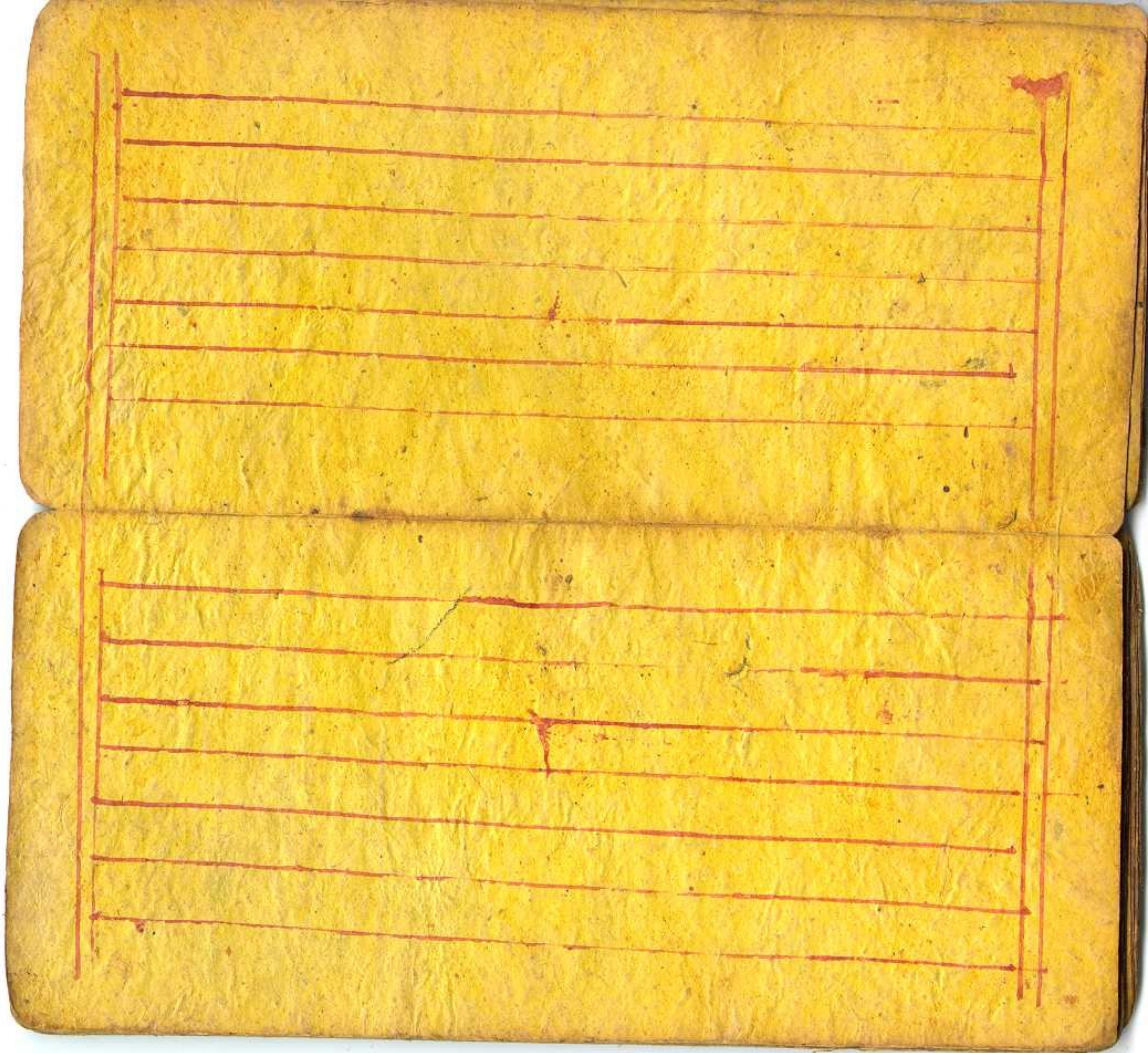
ASHA ARCHIVES

1.233

2012-2013











59

[illegible]

सुखादिगुणगणहृदयवृक्षकाशादिनाथानानिज्ञानसुत्रानिनाम
मथानिदृष्टा॥थनिधाय॥ॐनामोभगवतेसर्वसुखंमययच्छमस्तुसुख
नायकं॥ॐश्रीधर्मवज्रसूत्रंमययच्छमस्तुसुखनायकं॥ॐश्रीक
र्मवज्रसूत्रंमययच्छमस्तुसुखनायकं॥यानियुष्यादियज्ञा॥त
त्त्वथथस्तस्यगुरुकात्रलगायत्रयुमिस्वालोत्रयंसूत्रकागिथिविया
वःयनिसुथमय॥स्वडालाहाहनक्रानिस्थिरकवजानयस्वदुडास
मन॥ॐ॥कु॥॥थनयठयाडाकाय।वेरसूत्रमागिक्रमथहंॐॐश्री
स्वाहा॥श्रीकोलासूद्वंवेतिविथींश्रीकागसगुप्रथमक्रुथनदयकंद

[illegible]

मसिहलसां॥ रावेना॥ सवर्गमसिसेयुहानुनात्मकवशानृत्यचि
 लमनः हानामृतपूर्यविराग्य॥ योजामनु॥ उं वज्रधर्मो ज्ञो स्वाहा
 ॥ थं न चाकर्किया रावेना॥ लखक मरुतारुनूर्यविराग्य॥ न न ४८८
 ॥ छि मूर्ध सः यथक्रमं वज्रयद्यचक्रस्मान् उं श्राहं वासिकदक्षिण
 कलया ४८८ सूर्योपचि कलरुवज्रमिति टिं ध्यात्वाः उं श्राहं ॥ थं न
 निकायाधिथानयाय॥ नाला ॥ हल्लयुगा॥ हवैराजना॥ प्रखनीयं
 यजमाद्यवर्जवीरिण्य॥ धमनं न नायमृकं न स्वां जाययात्यं धल २१२
 कर्कषुचकं॥ उंधी ४८८ निसृतिविजयसर्वो हानायलायला निलिजो

[illegible]

नमः॥ नमो ध्रुव॥ नमो लोकोत्तम॥ नमो ४ सिककादीनां थनसि ० नमो ३ गि
नालो आदिनां॥ स्नान पूजा याय॥ उं नमः ४ समकवृद्धायैनां सवाधि निवि
गुह्यानां सर्वविघ्न हनु कुहं २५ स्नाना॥ उं हं गं हं हं हं॥ काय उजाय
मन॥ थन दयको दया मनु न वजन थिय कं जाय याय॥ धन॥ १०६
यं चापहाल पूजा॥ वज्र नाचो मत्त सिद्धं लुयी॥ यं लागतु॥ वज्र सत्व शा॥
थन वजां वग मूद्रान थिय कं॥ ग नाकं ले न दधिं य यो न॥ कर्मिक म
वजी सहावन स्नान कुरु कं॥ वजां राज सहा वं गिलिय क द्यय समाप
यं॥ नमः ३ वं को यय न॥ मं तुलं थं नं सां कं शो विं यं नं रुं नां द

शुभाय सिद्धि त्रय ध्य वचनोदा साद्ध कर्मिक मनु नत्र कावीय॥ शचा
यं रुस्यं जाय सानु कुरु कं॥ ॥ थन हस पूजा॥ स ० सिकज काय जगु
गु चियु निमा दय कं कल उ गुली वस्तुक नडा ज्ञाय॥ थन वचि वि
य॥ मं तुलं थं नं सां कं शो विं यं नं रुं नां द सिकज पूजा विधि॥ यानि
निर्माण धन विधि॥ ॥ यं ठि चायं रुच सा॥ द गुलि वलिक वण
न्या स॥ गचय निरु न सां म चय निरु न सां॥ स्नाना॥ धि ४ काव क
जक जानि नं वा गव र्जं नं कं नाको जय चि नं विरुवा॥ यूजा॥ मनु॥
उं वज्र कं हं थनं नं डा॥ उं वज्र सत्व हं॥ यं न ४३॥ उं वज्र यक हं॥ लू कल सां

रुद्रमहास्त्रनमस्त्रिस्तानकलेमहर्षः॥ धातु ३॥ अथ वना
युद्धाय॥ ०॥ युगायाय॥ स्वविजयस्मिन्निहानसत्त्वमाकृष्य॥
उर्वरकृत्सादिभूदा॥ इति ह्येव ह्यसमयसमयसहं॥ ०॥
थनथवेहदयवीजनदवर्त्तदयकाधनैर्वसवर्नथथसंशा
वे॥ मन्त्रजाययाययंरसुप्रकानःवज्रवानायायकुद॥ गताकेन
यजय॥ यवलिविषसुनवियः॥ नित्यं सवनविधि॥ ७॥ ८

२३ नमोऽग्रीवजसत्त्वाय नमः॥ दणक्रियावीक्षनमाह॥ यानीसाधन
सिद्धययुगायाय॥ लावना॥ नन॥ युविप्रसिद्धादिकैः मृदिनीऽनु
ताधिमाकर्त्तुं ह्येव निश्चयं कीचिद्यमानदवनाकाजविष्य॥ नथ
गतायत्सुतावं नत्सुतावं सिद्धं गत॥ धनं यदयाडासुद्धयाय॥ नर
सिद्धं अगर्त्तुं ह्येव॥ युयादिपूजा॥ यं लाभ्यमु॥ सानिध्दं कुरुथ॥ ध
नुः॥ अर्थां गताय जय॥ स्वयायि सर्वसंबुद्धावाधिसर्वगः॥ इति ब्रह्मा
कृता वास्य सानिध्दं कुरुमहर्षथ॥ वज्रं कृत्वादिभूदाकाय॥ इति कलान

मकं वृदानयत्वारिलिखितं दवता बीजं निष्ठां वृद्धवता
युवैर्लभ्यैः सर्वतथागतान्नाचयतः दवत्वापुत्रियति चर्युष्मा
त्वाः पूर्ववत् ॥ यथाक्रमं हृदातिवेष्टं ज्ञातुं कालं दृष्ट्वा न
जवं बीजं चेद्विहितं ॥ ० ॥ पुविपुत्रुन जि ० ॥ सादो म
दिनी ॥ रावना ॥ ॥ २ न क सः ॥ सतः यिजसि दय
किं गङ्गा लयन दडाया नूयति सह दय मक वा या डाः द व य
नूय ७ सतः यन क मा जि स्रु कान यिनः ॥ स स व ना र्य ॥

अथानयि चानयनाः ॥ १ ॥ रा नो वे ॥ न ना ॥ गगन म ल च द्र
म लु ल ल न क ला का च द य ग र्हि नं गि त लः स हि तं द व ता
वीजं दृष्ट्वा ॥ धू य ॥ यथा हि सर्वसंभूदाः पुषित संयुति स्थिता
माया दया यथा क कः न द लि ष्ट ति ला क ना ॥ सम चो स च रु
मा वृ द्वा रु म्बा दि सं स्थि ता ॥ १ ॥ रु म्बा का दं ना म व र्जं द व ता क
स्य याम्य रं जि स्थाना म नू कं या य स लो थ म्पु ति रु रु ना वि जं